उत्तरी एवं दक्षिणी छोटानागपुर में पर्यटन और आदिवासी ज्ञान प्रणाली: सांस्कृतिक परिदृश्य, स्मृति और सतत विकास

अर्चना राणा
सहायक प्राध्यापक एवं शोधार्थी
शिक्षा विभाग, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत

DOI: 10.64823/ijter.2602003

© ***2026 The Author(s).*** Published by ***Ambesys Publications***. This is an open-access article distributed under the terms of **Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0)** (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

***सार (Abstract)*:** उत्तरी एवं दक्षिणी छोटानागपुर क्षेत्र भारत के उन विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सम्मिलित हैं जहाँ प्राकृतिक पर्यावरण, आदिवासी समाज, धार्मिक आस्थाएँ और ऐतिहासिक स्मृतियाँ परस्पर गहराई से जुड़ी हुई हैं। पर्यटन संबंधी विमर्श में इस क्षेत्र को प्रायः प्राकृतिक सौंदर्य, जलप्रपातों, वन क्षेत्रों और धार्मिक तीर्थों तक सीमित कर दिया जाता है, जबकि यहाँ की आदिवासी ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक स्मृति और जीवित परिदृश्य अपेक्षाकृत उपेक्षित रहते हैं।

यह शोध-लेख पर्यटन को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में न देखकर, उसे आदिवासी ज्ञान प्रणाली और सांस्कृतिक परिदृश्य के व्यापक संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार पारंपरिक आदिवासी ज्ञान—जैसे प्रकृति-पूजा, भूमि-संस्कृति, कृषि चक्र, लोककथाएँ और सामुदायिक अनुष्ठान—पर्यटन के वैकल्पिक और सतत मॉडल का आधार बन सकते हैं। यह लेख द्वितीयक स्रोतों, अंतरराष्ट्रीय पर्यटन साहित्य और क्षेत्रीय अध्ययनों के विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि यदि पर्यटन विकास को आदिवासी स्मृति, सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक सहभागिता के साथ जोड़ा जाए, तो यह न केवल सांस्कृतिक संरक्षण को सुदृढ़ करेगा, बल्कि स्थानीय आजीविका और सामाजिक गरिमा को भी सशक्त बनाएगा।

मुख्य शब्द (Keywords): आदिवासी ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक परिदृश्य, सतत पर्यटन, छोटानागपुर पठार, सांस्कृतिक स्मृति

I. भूमिका (INTRODUCTION)

पर्यटन को लंबे समय तक केवल मनोरंजन और अवकाश की गतिविधि के रूप में देखा जाता रहा है। किंतु समकालीन सामाजिक विज्ञान के अध्ययनों में पर्यटन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है जो सांस्कृतिक अर्थों, पहचान और स्मृति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (Timothy & Boyd, 2015) । विशेष रूप से विकासशील देशों में पर्यटन को स्थानीय संसाधनों के उपयोग, क्षेत्रीय विकास और सांस्कृतिक प्रस्तुतीकरण के माध्यम के रूप में देखा जाता है।

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक समाज में पर्यटन का स्वरूप अत्यंत जटिल है। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, ऐतिहासिक अनुभव और सामाजिक संरचना के साथ पर्यटन मानचित्र पर उपस्थित होता है। झारखंड का छोटानागपुर पठार इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध होने के साथ-साथ आदिवासी ज्ञान, परंपरा और स्मृति का भी केंद्र है।

हालाँकि, वर्तमान पर्यटन नीतियाँ और अभ्यास प्रायः इस ज्ञान को पर्यटन संसाधन के रूप में पहचानने में असफल रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप पर्यटन विकास सतही और अल्पकालिक बन जाता है। इसी पृष्ठभूमि में यह अध्ययन पर्यटन को आदिवासी ज्ञान प्रणाली और सांस्कृतिक परिदृश्य के संदर्भ में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास करता है।

II. साहित्य समीक्षा (LITERATURE REVIEW)

पर्यटन और सांस्कृतिक परिदृश्य पर आधारित वैश्विक साहित्य यह दर्शाता है कि पर्यटन केवल भौतिक स्थलों का उपभोग नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक अर्थों और सामाजिक स्मृतियों का निर्माण भी करता है (Timothy & Boyd, 2015) । यूनेस्को (UNESCO, 2017) ने "सांस्कृतिक परिदृश्य" की अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया है कि कुछ परिदृश्य मानव और प्रकृति के दीर्घकालिक अंतःक्रिया का परिणाम होते हैं।

Choe और O'Regan (2020) ने दक्षिण एशिया में धार्मिक पर्यटन के अध्ययन में यह पाया कि तीर्थ स्थल केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं होते, बल्कि वे सांस्कृतिक स्मृति और सामूहिक पहचान के वाहक भी होते हैं। Singh (2016) ने झारखंड में पर्यटन विकास पर अपने अध्ययन में यह रेखांकित किया कि स्थानीय सांस्कृतिक संसाधनों को नज़रअंदाज़ करने से पर्यटन का लाभ सीमित रह जाता है।

Patel और Raj (2020) ने आदिवासी क्षेत्रों में समुदाय-आधारित पर्यटन को स्थानीय ज्ञान प्रणाली से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया है। वहीं Thakur (2021) ने आदिवासी पर्वों और उत्सवों के पर्यटन उपयोग में सांस्कृतिक संवेदनशीलता को अनिवार्य बताया है। यह साहित्य इस अध्ययन को सैद्धांतिक और वैचारिक आधार प्रदान करता है।

III. आदिवासी ज्ञान प्रणाली: अवधारणा और महत्व

आदिवासी ज्ञान प्रणाली से तात्पर्य उन पारंपरिक ज्ञान, विश्वासों और व्यवहारों से है जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संचरित होते आए हैं। यह ज्ञान कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण, धर्म और सामाजिक संगठन से गहराई से जुड़ा होता है (Patel & Raj, 2020) ।

छोटानागपुर क्षेत्र में आदिवासी ज्ञान प्रणाली का आधार प्रकृति के साथ सहजीवन है। भूमि को माता के रूप में देखा जाता है और जंगल को जीवन का स्रोत माना जाता है। सरना स्थल, जहाँ सामूहिक पूजा होती है, इस ज्ञान प्रणाली के मूर्त रूप हैं। ये स्थल केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व भी रखते हैं (Singh, 2016) । पर्यटन के दृष्टिकोण से यह ज्ञान प्रणाली "जीवित विरासत" है, जिसे समुदाय से अलग करके नहीं समझा जा सकता।

IV. सांस्कृतिक परिदृश्य और छोटानागपुर का भूगोल

यूनेस्को के अनुसार सांस्कृतिक परिदृश्य वे क्षेत्र हैं जहाँ मानव और प्रकृति की संयुक्त रचना दिखाई देती है (UNESCO, 2017) । छोटानागपुर पठार इसका सजीव उदाहरण है। यहाँ खेत, जंगल, नदियाँ, पूजा स्थल और पर्व स्थल मिलकर एक सांस्कृतिक परिदृश्य का निर्माण करते हैं। उत्तरी और दक्षिणी छोटानागपुर के आदिवासी गाँवों में स्थानों का सामाजिक अर्थ होता है। उदाहरणतः श्मशान, अखड़ा और सरना स्थल सामुदायिक जीवन के केंद्र होते हैं। पर्यटन यदि केवल प्राकृतिक दृश्यावलियों तक सीमित रहे, तो यह सांस्कृतिक परिदृश्य अदृश्य ही रह जाता है।

V. पर्यटन और सांस्कृतिक स्मृति

सांस्कृतिक स्मृति वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज अपने अतीत को संरक्षित करता है और वर्तमान में उसका अर्थ निर्मित करता है (Assmann, 2011) । छोटानागपुर में लोककथाएँ, गीत, नृत्य और पर्व इस स्मृति के प्रमुख वाहक हैं। सरहुल, करमा और सोहराय जैसे पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि प्रकृति, कृषि चक्र और सामुदायिक एकता की स्मृति हैं

(Thakur, 2021)। पर्यटन यदि इन पर्वों को केवल "इवेंट" के रूप में प्रस्तुत करता है, तो स्मृति का यह गहरा सांस्कृतिक अर्थ कमजोर पड़ सकता है।

VI. पर्यटन, पहचान और प्रतिनिधित्व

पर्यटन में सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आदिवासी संस्कृति को रूढ़ छवियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए, तो यह सांस्कृतिक विकृति को जन्म देता है। Smith (2006) के अनुसार, विरासत का प्रस्तुतीकरण हमेशा सत्ता और प्रतिनिधित्व से जुड़ा होता है। समुदाय-नेतृत्व वाला पर्यटन आदिवासी समुदायों को अपनी संस्कृति स्वयं प्रस्तुत करने का अवसर देता है, जिससे सांस्कृतिक आत्मसम्मान और पहचान सुदृढ़ होती है (Patel & Raj, 2020) ।

VII. सतत पर्यटन और वैकल्पिक मॉडल

UNWTO (2018) के अनुसार सतत पर्यटन का उद्देश्य आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना है। छोटानागपुर जैसे क्षेत्रों में यह संतुलन तभी संभव है जब पर्यटन को आदिवासी ज्ञान प्रणाली से जोड़ा जाए। आदिवासी मार्गदर्शक, सांस्कृतिक व्याख्या केंद्र और सामुदायिक अनुभव पर्यटन के वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत कर सकते हैं, जो पर्यटकों को गहन और अर्थपूर्ण अनुभव प्रदान करते हैं।

VIII. चुनौतियाँ

इस प्रकार के पर्यटन मॉडल के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं—आदिवासी ज्ञान के व्यवसायीकरण का खतरा, नीति निर्माण में समुदाय की सीमित भूमिका, और बाहरी एजेंसियों का प्रभुत्व (Singh, 2016; UNWTO, 2018) । इन चुनौतियों का समाधान बिना सहभागी शासन के संभव नहीं है।

IX. सुझाव (RECOMMENDATIONS)

1. पर्यटन नीति में "आदिवासी ज्ञान प्रणाली" और "सांस्कृतिक परिदृश्य" को औपचारिक मान्यता दी जाए।
2. समुदाय-नेतृत्व वाले पर्यटन मॉडल को प्रोत्साहित किया जाए।
3. सांस्कृतिक आयोजनों के पर्यटन उपयोग में समुदाय की सहमति अनिवार्य की जाए।
4. शोध और दस्तावेजीकरण के माध्यम से आदिवासी ज्ञान का संरक्षण किया जाए।

X. निष्कर्ष (CONCLUSION)

उत्तरी एवं दक्षिणी छोटानागपुर में पर्यटन की संभावनाएँ केवल प्राकृतिक सौंदर्य तक सीमित नहीं हैं। यहाँ की आदिवासी ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक परिदृश्य और स्मृति पर्यटन के लिए एक वैकल्पिक और समावेशी आधार प्रदान करती हैं। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि पर्यटन यदि समुदाय, संस्कृति और स्मृति के साथ जुड़कर विकसित हो, तो यह सतत विकास का प्रभावी साधन बन सकता है। यही दृष्टिकोण छोटानागपुर क्षेत्र के पर्यटन भविष्य को अधिक न्यायपूर्ण, गरिमामय और संतुलित बना सकता है।

संदर्भ (REFERENCES – APA FORMAT)

[1] Assmann, J. (2011). *Cultural memory and early civilisation*. Cambridge University Press.
[2] Choe, J., & O'Regan, M. (2020). Sacred journeys in South Asia: Pilgrim–tourist encounters. *Tourism Review, 75*(4), 947–960.
[3] Patel, S., & Raj, M. (2020). Community-based tourism in tribal India: Opportunities and constraints. *Tourism Research Journal, 8*(2), 101–118.

[4] Singh, D. (2016). Tourism development and sustainable practices in Jharkhand. *Indian Journal of Tourism Management, 5*(4), 55–72.
[5] Smith, L. (2006). *Uses of heritage*. Routledge.
[6] Thakur, N. (2021). Interpreting tribal festivals: Visitor experiences and cultural sensitivity. *Journal of Tourism and Culture, 4*(1), 15–29.
[7] Timothy, D. J., & Boyd, S. W. (2015). Heritage tourism in the 21st century: Valued traditions and new perspectives. *Journal of Heritage Tourism, 10*(1), 1–7.
[8] UNESCO. (2017). *Cultural landscapes*. UNESCO World Heritage Centre.
[9] UNWTO. (2018). *Tourism and sustainable development goals*. World Tourism Organisation.